International Journal of Home Science 2016; 2(1): 186-188

ISSN: 2395-7476
IJHS 2016; 2(1): 186-188
© 2016 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 18-01-2016
Accepted: 21-02-2016

डॉ. प्रतिभा पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, गृहसिज्ञान, गाांधी शताब्दी स्मारक, स्नातकोत्तर महासिद्यालय, कोयलसा, आजमगढ, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. प्रतिभा पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, गृहसिज्ञान, गाांधी शताब्दी स्मारक, स्नातकोत्तर महासिद्यालय, कोयलसा, आजमगढ, उत्तर प्रदेश, भारत

बालिका शिक्षा की चुनौतियों का विश्लेषण

डॉ. प्रतिभा पाल

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना है। भारतीय परिदृश्य में बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का आंकलन करने की दृष्टि से उन चुनौतियों को समझने का प्रयास किया गया है जो किसी न किसी रूप में बालिकाओं की शिक्षा तथा उनके विकास को प्रभावित करते हैं। उक्त अध्ययन के अंतर्गत बालिका शिक्षा की पृष्ठभूमि का भी विश्लेषण किया गया है ताकि इन परिवर्तनों को भी समझा जा सके जो कालांतर में हुए हैं। अतः इस विषय अध्ययन करना अत्यंत ही कारगर सिद्ध होगा।

मूलशब्द: बालिका शिक्षा, ग्रामीण पिछड़ापन, पितृसत्तात्मक समाज, महिला साक्षरता

प्रस्तावना
किसी भी राष्ट्र की समृद्धि तथा विकास में शिक्षा का अद्वितीय स्थान रहा है। शिक्षा का परंपरा को उस राष्ट्र के नागरिकों तथा राष्ट्रीय उन्नति का द्योतक माना गया है। भारतीय परिवेश में बालिकाओं के विषय में शिक्षा की पृष्ठभूमि अत्यंत ही संघर्षों से परिपूर्ण रही है। भारतीय संस्कृति की पितृसत्तात्मक विशेषताएं बालकों की तुलना में बालिकाओं को विकास की कम अवसर प्रदान करती है। जिनके प्रभाव को बालिकाओं के विकास के प्रत्येक स्तर पर निम्न स्थिति को प्रदर्शित करते हुए देखा जा सकता है। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह उम्मीद थी कि बालिका विकास की दिशा में महत्वपूर्ण तथा प्रभावी कदम उठाए जाएंगे अथवा पितृसत्तात्मक समाज की नींव को कमजोर किया जाएगा परंतु इस विषय पर आशा के विपरीत परिणाम प्राप्त हुए हैं। बालिका शिक्षा की अत्यंत कमजोर स्थिति को समझने हेतु निम्न आंकड़ों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 64.46 फीसदी है जबकि इसके विपरीत पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 फीसद दर्ज की गई है। इसके अतिरिक्त कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारत में वर्तमान में भी 142 मिलियन महिलाएं ऐसी है जो पढ़ने लिखने में असमर्थ है अर्थात शिक्षा से वंचित रह गई है।
बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए स्वामी विवेकानंद का कहना था कि, "वही देश उन्नति कर सकते हैं जहा स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया जाता है।"
गांधी जी के शब्दों में बालिका शिक्षा, "बालिकाओं को भी वही शिक्षा दी जाए जो पुरुषों के लिए उपलब्ध हो। यदि हो सके तो उन्हें विशेष सुविधाएं मिलनी चाहिए।"

शिक्षा विभाग (1964-66) के अनुसार, "स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों के शिक्षा से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। लड़कियों के शिक्षा पर जितना भी जोड़ दिया जाए उतना ही थोड़ा है।"

अध्ययन उद्देश्य

उक्त अध्ययन के अंतर्गत निम्न उद्देश्यों को आधार बनाया गया है ।

1. बालिका शिक्षा की पृष्ठभूमि को समझना।
2. बालिका शिक्षा के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियों का अध्ययन करना।

बालिका शिक्षा की आवश्यकता व इसकी पृष्ठभूमि

भारत में बालिका शिक्षा की अवधारणा का जन्म वैदिक काल से ही माना जाता है । वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति को पुरुषों के समतुल्य माना गया है। इसके अतिरिक्त वेदों में भी नारी की शिक्षाए शील ए गुणए कर्तव्य तथा अधिकारों का विशद वर्णन मिलता है। बालिका शिक्षा की आवश्यकता को सिद्ध करने की दृष्टि से समाज में फैली उन समस्त सामाजिक कृतियों का विश्लेषण किया जाना अति आवश्यक है जिनका प्रभाव प्रतिदिन किसी ना किसी स्थान पर बालिकाओं अथवा महिलाओं पर पड़ता है। बालिकाओं को शिक्षित करना इसलिए भी अति महत्वपूर्ण है क्योंकि बालिका के शैक्षिक विकास के बिना राष्ट्र का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। भारतीय संविधान में महिला तथा पुरुषो को समानता का दर्जा हासिल है संविधान के अनुच्छेद 45 के तहत 14 वर्ष से कम आयु के बालक तथा बालिकाओं को अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है।

समाज में व्याप्त विसंगतियों के फल स्वरुप बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने की उत्तर में बढ़ोतरी देखी जा सकती है।

तालिका 1: बालिकाओं के स्कूल छोड़ने की दर प्रतिवर्ष

वर्ष	प्राथमिक	उत्क्रमित	माध्यमिक
1960-61	70.9	85.0	NA
1970-71	70.9	83.4	NA
1980-81	62.5	79.4	86.6
1990-91	46.0	65.1	76.9
2000-01	41.9	57.7	71.7
2004-05	25.4	51.2	64.0

स्रोत: MHRD 2005

उपर्युक्त तालिका में दर्शाए गए आंकड़ों के आधार पर यह समझा जा सकता है कि बालिकाओं द्वारा विद्यालय छोड़ने कि धर 1960 के दशक में प्राथमिक तथा उत्क्रमित स्तर पर सर्वाधिक थी जो कि वर्ष 2005 में इसके विपरीत स्थिति को प्रकट करती है। 2005 के आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ने कि दर 25.4 फीसदी है जबकि उत्क्रमित तथा उसके पश्चात माध्यमिक स्तर तक आते आते यह दर 65 फ़ीसदी के पास पहुंच जाती है। जिन के मुख्य कारणों हेतु संतुलित शिक्षा का अभाव तथा संकीर्ण सामाजिक परंपराएं उत्तरदाई होती है।

बालिका शिक्षा के समक्ष चुनौतिया

1. आर्थिक समस्या

भारत में प्राय यह देखा जाता है कि भारत के अधिकतर आबादी ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करती है अर्थात भारत में आर्थिक तौर पर कमजोर वर्गों का अनुपात सर्वाधिक है आता है आर्थिक स्थिति का कमजोर होना बालिकाओं को उनके शिक्षा के अवसरों से वंचित कर देता है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले निर्धन परिवारों में बालिकाओं के शिक्षा संबंधी खर्चों को वहन करने की क्षमता नहीं होती या आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए पारिवारिक सदस्यों द्वारा बालिका शिक्षा को अनुचित समझा जाता है अथवा उन्हें घर का स्थाई सदस्य नहीं समझा जाता।

2. रूढ़ीवादी परंपराएं

रूढ़ीवादी परंपराओं के अंतर्गत वे परंपराएं उत्तरदाई होती है जो पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यूह रचना का निर्माण करती हैं।

सामाजिक रूढ़िवादिता का परिणाम है कि आज भी भारत में जेंडर समानता जैसे मुद्दे काफी चर्चित रहते हैं। रूढ़ीवादी परंपराओं के अंतर्गत रूढ़िवादी सोच का अहम किरदार होता है जिसके अंतर्गत बालिकाओं अथवा महिलाओं को गृह प्रबंधन के लिए ही उपयोगी समझा जाता है रूढ़ीवादियों का मानना है कि बालिकाएं अपने से छोटे भाई बहनों की देखभाल घर की साफ सफाई मैं संलग्न होनी चाहिए अर्थात इनके अनुसार बालिकाओं की शिक्षा को सर्वदा उचित नहीं समझा जाता है।

इसके अतिरिक्त बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने के प्रमुख कारणों जैसे लड़कियों की युवा अवस्था की आरंभिक अवस्था पर उन पर लगा दिए जाने वाले सामाजिक प्रतिबंधए बाल विवाह तथा पर्दा प्रथा आदि।

3. दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था

शिक्षा अपना आर्थिक तथा सामाजिक विकास करने का एकमात्र साधन है परंतु बालिकाओं के विषय में यह उक्ति सर्वदा उचित नही है। शिक्षा प्रणाली की दोषपूर्ण

व्यवस्था बालिकाओं की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इस संदर्भ में दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था से तात्पर्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जिसके अंतर्गत बालक तथा बालिकाओं के लिंगिय विभेदक अंतरों को बढ़ावा दिया जाता है। प्राय कई शिक्षकों द्वारा जेंडर असमानता से परिपूर्ण सोच का प्रदर्शन किया जाता है।

इसके अलावा वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था का पाठ्यक्रम भी बालक बालिकाओं के मध्य विभेद को उत्पन्न करता है जिसके परिणाम स्वरूप बालिकाओं का सामाजिक विकास अवरुद्ध होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का चयन तथा उसका वर्गीकरण बालक बालिकाओं में विभेद को उत्पन्न करता है।

4. बालिका विद्यालयों की समस्या

बालिका शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान बालिका विद्यालयों का होता है परंतु वर्तमान में भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां बालिका विद्यालयों का अभाव है। इसके अतिरिक्त बालिका विद्यालयों के निर्माणए उनके क्रियान्वयन तथा वार्षिक खर्चे से संबंधित अभाव के चलते कई बालिका विद्यालयों को बंद करना पड़ा है जिसका सीधा सा प्रभाव उस क्षेत्र से पढ़ने आने वाली बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था पर पड़ा है। तथा विद्यालयों का उनके निवास स्थान से दूर स्थापित होना भी एक प्रमुख कारण है। प्राय यह देखा जाता है कि प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर चुके बालिकाएं हैं माध्यमिक विद्यालय दूर होने पर पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देती हैं अथवा छुड़वा दी जाती है।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में पिछड़ापन

भारत में अधिकतर जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की निम्न स्थिति के कारण पिछड़ापन एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में व्याप्त है। ग्रामीण पिछड़ेपन का व्यापक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शिक्षा पर भी देखने को मिलता है। माताण्पिता द्वारा बालिकाओं को कृषि कार्यों में अथवा पशुओं के प्रबंधन में उचित समझा जाता है जबकि उनके विद्यालय आने जाने अथवा पढ़ने संबंधी मुद्दों पर असामंजस्य जैसी स्थिति देखने को मिलती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन की समीक्षा के पश्चात यह कहा जा सकता है कि बालिका के विकास में शिक्षा की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है। जिस प्रकार शिक्षा किसी भी मनुष्य को विकास के साधन उपलब्ध करवाती है इन्हीं उद्देश्यों से बालिकाओं की शिक्षा भी अति महत्वपूर्ण होती है। परंतु इसके समक्ष आने वाली चुनौतियों के परिणामस्वरूप आज भी कई बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर सकने में असमर्थता महसूस करती है। हालांकि गत वर्षो में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में भारत ने काफी उन्नति की है। देश के बड़ेण्बड़े शिक्षण संस्थानों में शीर्ष स्थानों पर बालकों की तुलना में बालिकाओं का अधिक चयन हुआ है जो इस बात की पुष्टि करता है कि बालिका शिक्षा की दिशा में किए जाने वाले कार्य के सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. MHRD 2005
2. जे सी अग्रवाल, भारत में नारी शिक्षा, प्रभात प्रकाशन 2009
3. राजेंद्र मिश्रा, बालिका शिक्षा विश्व एवं भारत के संदर्भ में, नवसाक्षर प्रकाशन 2006